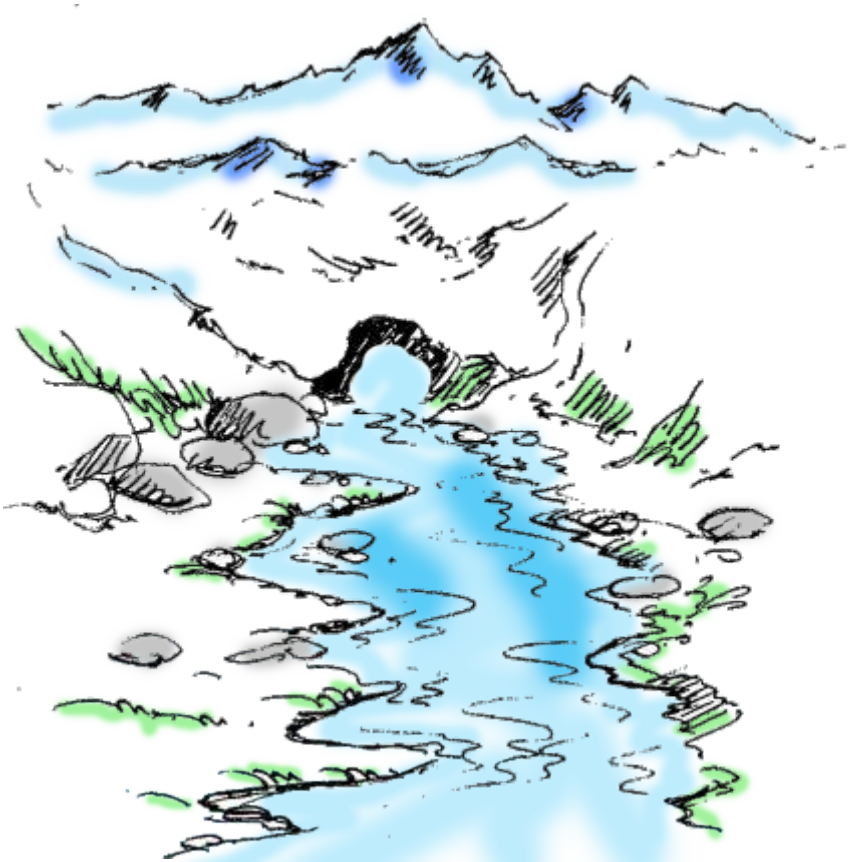

“मेरा नाम गंगा है”

मेरा नाम गंगा है। जिस तरह तुम्हारा नाम विनय, आकाश, नदीम, मीना, सोनू मोनू है। तुम्हारा एक घर है जहाँ तुम अपने परिवार के साथ रहते हो, उसी प्रकार मेरा घर भी हिमालय पर्वत में गंगोत्री मुहल्ले में है। मेरे घर का नाम “गौ मुख” है।

अपने घर और मुहल्ले में खेलते खेलते अब मेरा मन कुछ बहार दूर तक घूमने का हुआ
तो मैं भी तुम्हारी तरह अपने घर और मौहल्ले से बाहर उछलती–कूदती दूर आ गयी।

बाहर आकर मेरी कुछ और सहेलियाँ भी बनी।
भागीरथी, भिलंगना, अलकनंदा ये सब मेरी बचपन की सहेलियाँ हैं समय के साथ मैं भी धीरे–धीरे बड़ी हो गयी।

अब मेरा उछलना–कूदना बन्द ही हो गया। हरिद्वार आकर तो मेरा स्वभाव ही बदल गया। सहेलियाँ पीछे छूट गयीं,
मैं एक दम शान्त स्वभाव की हो गयी,
अब मैं शोर नहीं मचाती हूँ।
अकेली किससे बात करूँ।
मेरी चुप्पी का सबने खूब फायदा उठाया।

मुझे परेशान किया।
मेरे पानी को गन्दा कर दिया।
कूड़ा–कचरा, नहाना–धोना, कारखानों
की गन्दगी सब मुझमें ही डालते गये।
मैं अकेली कैसे विरोध करती, लड़ भी तो नहीं सकती थी,
वापस घर नहीं जा सकती थी, मैं उदास और दुखी सी रहने लगी।

लेकिन जल्दी ही कुछ नयी सहेलियाँ बनने लगी। यमुना तो पक्की सहेली है लेकिन गोमती, घाघरा, केन, बेतवा से भी दोस्ती थी। अब मैं खुश थी नयी सहेलियों के साथ नयी मंजिल की तलाश में निकल पड़ी। हम साथ थे अब, भला किस बात का डर था, कानपुर, बनारस, इलाहाबाद होते हुए मैं कोलकाता पहुँची। मेरा यहाँ एक नया नाम हुगली रख दिया गया।

ये नाम अच्छा है पर मेरी पहचान तो गंगा नाम से ही है अपने नए घर बंगाल की खाड़ी की ओर बढ़ते समय मैंने अपने बाल खुले कर दिए जहाँ मैंने ऐसा किया वह स्थान गंगा सागर कहलाता है।

राज्य परियोजना कार्यालय
सर्व शिक्षा अभियान उत्तराखण्ड, देहरादून।

कहानी : **डॉ. मंजू पाण्डे**, स. अ.
चित्राकंन : **राजेन्द्र लाल**, प्रवक्ता